



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....फैसला कृषि

दिनांक ११.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....३ कॉलम.....२७

मौसम सफेद मक्खी के अनुकूल, इसीलिए गांवों में फसल हुई बर्बाद

जागरण संवददाता, हिसार :

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में शुक्रवार को कपास की फसल में रोगों के प्रबंधन की लेकर वेबिनार आयोजित हुआ। इसमें पौधे प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग द्वारा किसानों को कपास के रोग के साथ कीटों से बचाव के बारे में भी बताया गया। कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि मौजूदा समय में यह वेबिनार इसलिए भी जरूरी हो गया है, क्योंकि क्षेत्र में उखड़ा रोग के कारण कपास की फसल पूरी तरह से बर्बाद हो गई है।

कृषि विज्ञानियों ने वेबिनार के माध्यम से किसानों को दवाएं भी बताई, जिनका प्रयोग कर कर कपास की फसल बचा सकते हैं। विज्ञानियों ने बताया कि इस साल मौसम सफेद मक्खी के अनुकूल है। पर्यावरण प्रकोप और भी बढ़ सकता है।



एचएयू में कपास की फसल में रोगों के प्रबंधन को लेकर वेबिनार में जुड़े विज्ञानी। • विज्ञापि।

सलाह का पालन करें

अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि कपास प्रदेश की एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। इसलिए किसानों को इस फसल के लिए कृषि विज्ञानियों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

रस चूसने वाले कीड़ों से सावधान

कीट विज्ञानी डा. अनिल जाखड़ ने कहा कि कपास की फसल में रस चूसने वाले कीड़ों में सफेद मक्खी, छिपा व हरा तेला मुख्य है, जो फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। इनमें सफेद मक्खी सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। इनसे सावधान रहने की जरूरत है। इन कीटों की जानकारी मिलते ही तकलीफ कृषि विज्ञानियों से सलाह लें।

कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। विज्ञान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें।

प्रो. समर सिंह, कुलपति, एचएयू



विज्ञानियों की सलाह : कपास की फसल में बीमारी लगने पर किसान इन दवाओं का करें छिड़काव

- पतों पर छिड़काव के रूप में 2.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 100 लीटर पानी या पोटेशियम नाइट्रेट (13-0-45) की 2.0 किलोग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से प्रयोग करें।
- सफेद मक्खी के लिए स्पाइरोमेसिफेन (ऑबरोन) 22.9 एसरी की 240 मिलीलीटर मात्रा या नीम आधारित कीटनाशक (निविरीडीन/ अवृक) की 1.0 लीटर मात्रा या पाइरीप्रोडीफेन (डारटा) 10 ईसी की 400 मिलीलीटर मात्रा को 200-250 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से पौधों पर निचली पत्तियों तक छिड़काव करें।
- कपास के पते ज्यादा काले दिखाई दें तो कॉपर ऑविसकोराइड की 600 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- पेराविल्ट बीमारी के संभावित इलाकों में कोबाल्ट क्लोराइड की 2.0 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में लक्षण दिखाई देने के 24 से 48 घण्टों के अंदर छिड़काव करें। जहां सिंचाइ या बारिश के बाद ज्यादातर पौधे मुरझा जाते हैं तो उन क्षेत्रों में इस बीमारी की संभावना होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या..... १३ कॉलम..... १३

ट्रैक़ : २४१

कपास की फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन जट्ठी : वीडी

हरियाणा न्यूज़ || हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौधे प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में हायकपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय

- हृषि में ऑनलाइन वेबिनार आयोजित
- कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के मुख्य रोगों के लक्षण बताए

द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिड़काव नुकसानदायक हो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पौष्ण के चलते समस्या बढ़ी है। वेबिनार के संयोजक व

आनुवांशिकी एवं पौद्य प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छाबड़ा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कपास वैज्ञानिक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान ने मंच का ऑनलाइन संचालन किया एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। वेबिनार के दौरान संदीप, अक्षय कुमार, तेजराम बघेल, अनिल, दोपक आदि किसान व कृषि अधिकारियों डॉ. अरुण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कुमुम चौधरी, डॉ. मंदीप राठी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मौजूदा समय में आई समस्याओं को लेकर सवाल भी किए, जिनका कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बेहतर तरीके से जवाब दिया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
दीनक मासिक

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या २ कॉलम ३

कपास की फसल में रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : प्रो. समर सिंह

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग ने ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया। इसका मुख्य विषय 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पोषण के चलते समस्या बढ़ी है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

पंजाब के सारी

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या ३ कॉलम ६. ७

सफेद मक्खी के अनुकूल मौसम, किसान फसल की कर्टे निगरानी

हिसार, 4 सितम्बर (ब्यूरो) : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि इस साल मौसम सफेद मक्खी के अनुकूल है, अगर समय पर आवश्यकतानुसार बारिश नहीं होगी तो इसका प्रकोप और भी बढ़ सकता है इसलिए किसान अपनी फसलों का विशेष ध्यान रखें और समय-समय पर लक्षण दिखाई देते ही कृषि वैज्ञानिकों से परामर्श करते रहें। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पत्तों पर छिड़काव के रूप में 2.5 किलोग्राम यूरिया प्रति 100 लीटर पानी या पोटैशियम नाइट्रेट (13-0-45) की 2.0 किलोग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से प्रयोग करें। इसके अलावा सफेद मक्खी के लिए स्पाइरोमेसिफेन (ऑबरोन) 22.9 एस.सी. की 240 मिलीलीटर मात्रा या नीम आधारित कीटनाशक (निम्बिसीडीन/अचूक) की 1.0 लीटर मात्रा या पाइरीप्रोक्सीफेन (डायटा) 10 इ.सी. की 400 मिलीलीटर मात्रा को 200-250 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में आवश्यकतानुसार बारी-बारी से पौधों पर निचली पत्तियों तक छिड़काव करें। यदि कपास के पत्ते ज्यादा काले दिखाई दें तो कॉपर ऑक्सिक्लोरोइड की 600 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

पेराविल्ट बीमारी के संभावित इलाकों में कोबाल्ट क्लोराइड की 2.0 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में लक्षण दिखाई देने के 24 से 48 घंटों के अंदर छिड़काव करें। जहां सिंचाई या बारिश के बाद ज्यादातर पौधे मुरझा जाते हैं तो उन क्षेत्रों में इस बीमारी की संभावना होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक मासिक

दिनांक ..5..: 9..2020.. पृष्ठ संख्या..... 2 कॉलम..... 5

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए मार्केटिंग के टिप्प

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए चल रही वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का समापन हो गया है। वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. बौके अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के अहम पहलुओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैथ और निवेश की व्यवस्था बहुत महत्वपूर्ण पहलू हैं। विषयन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विषयन के सभी क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

पड़ोसी के साथ

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २५.१.२०२० पृष्ठ संख्या.....५ कॉलम.....५

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्कीटिंग के टिप्पणी

हिसार, 4 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वैबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वैबिनार का समापन हो गया है। वैबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्कीटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वैबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के सी.ई.ओ. डा. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्कीटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम पहलुओं के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्कीटिंग स्ट्रैथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वैबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डा. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....ज्ञानालय

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या.....५ कॉलम.....८

स्टार्टअप के लिए बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्प

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए आयोजित हुए वेबिनार में प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। वेबिनार में दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के सीईओ डॉ. वीके अरोड़ा मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हुए।

डॉ. अरोड़ा ने कहा कि एक स्टार्टअप के लिए मार्केटिंग स्ट्रेंथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइब्र स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। इस अवसर पर एबिक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी, प्रशासनिक अधिकारी निशा मलिक फौगाट व तकनीकी प्रबंधक मैनेजर अर्पित तनेजा भी उपस्थित थीं। ब्यूरो



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... उमेर उजाला

दिनांक ५-९-२०२० पृष्ठ संख्या ४ कॉलम ७-८

25 साल बाद मिला न्याय, बोर्ड चेयरमैन एचएयू में बने प्रोफेसर

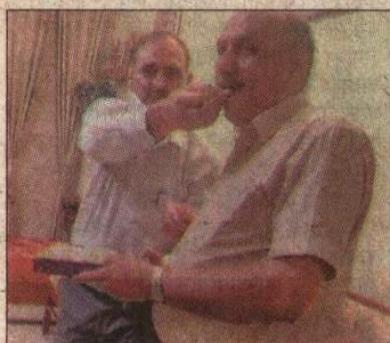
एचएयू की बैठक में पांच सितंबर 2010 से उन्हें प्रोफेसर माना

अमर उजाला ब्यूरो

भिवानी। पिछले 25 साल से न्याय के लिए संघर्ष करने वाले हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. जगबीर सिंह को आखिरकार न्याय मिला। एचएयू हिसार ने उन्हें प्रोफेसर पदोन्नत किया है। एचएयू हिसार में हुई बैठक में उन्हें पांच सितंबर 2010 से प्रोफेसर माना है। प्रोफेसर बनाए जाने पर बोर्ड चेयरमैन डॉ. जगबीर सिंह ने एचएयू के बाइस चासलर डॉ. समर सिंह व रजिस्ट्रार प्रो. बलदेवराज कंबोज का आभार जताया।

हरियाणा शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. जगबीर सिंह ने पिछले दिनों कोर्ट फैसले के बाद उन्होंने जिला विस्तार विशेषज्ञ के रूप में ज्वाइन किया था। 25 साल पहले इंटरव्यू पास करने के बावजूद उनका इस पद पर सिलेक्शन नहीं किया गया था। इसके बाद उन्होंने 25 साल तक लड़ाई लड़ी। कोर्ट के आदेश पर उन्हें 1995 के वरिष्ठता के हिसाब से ही सभी लाभ एचएयू में दिए गए।

1995 में एचएयू में जिला विस्तार विशेषज्ञ, पशु विज्ञानी की पोस्ट पर डॉ. जगबीर सिंह ने आवेदन किया था। डॉ. जगबीर सिंह पीएचडी है। नियमानुसार पीएचडी आवेदक को 10 अंक दिए जाते हैं। मेरिट में इन्हें नजरअंदाज किया



डॉ. जगबीर सिंह को मिठाई खिलाते एचएयू
के रजिस्ट्रार। - संवाद

गया। जिसके बाद उन्होंने कोर्ट का दरबाजा खटखाया। कोर्ट ने दोबारा मेरिट सूची तैयार करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने बताया कि इसके खिलाफ उन्होंने केस किया था। 1995 से 2014 तक केस चला। कोर्ट ने मामले को डिसमिस कर दिया। इसके बाद हाईकोर्ट में दोबारा एलपीए (लेटर पेटेंट अपील) की। इसके बाद केस दोबारा खुला। पिछले वर्ष उनके पक्ष में फैसला हुआ। कोर्ट ने पूर्व की भंती को भी बनाए रखा। साथ ही उन्हें इस पद पर ज्वाइन कराने के निर्देश दिए। अब एचएयू की बैठक में उन्हें प्रोफेसर बनाया गया है। वर्ष 2010 से उन्हें प्रोफेसर माना गया है। बोर्ड चेयरमैन को फोन पर, सोशल मीडिया पर बधाइयां मिल रही हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक मासिक

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या.....३ कॉलम.....१-४

फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' पर वेबिनार आज

हिसार | उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार 4 से 6 सितम्बर तक होगा। वेबिनार में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिए जाएंगे। यह जानकारी देते हुए एचएयू के अनुसंधान निदेशक व वेबिनार के आयोजक सचिव डॉ. अजय यादव ने बताया कि वेबिनार

में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार व महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह बतौर मुख्यातिथि शामिल होंगे। एचएयू के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. विजय अरोड़ा ने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन 'राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना' के सौजन्य से किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर
दिनांक ..१५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या.....५ कॉलम.....५

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की प्रवेश परीक्षा में एचएयू देगा पानी की बोतल

हिसार एचएयू में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की 6 सितंबर से होने वाली प्रवेश परीक्षा को लेकर एचएयू प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है। कोरोना से बचाव के लिए इस बार परीक्षार्थियों को कमरे में प्रवेश करने से पहले पानी की बोतल दी जाएगी। परीक्षार्थियों को बाहर निकलने की अनुमति नहीं होगी। प्रवेश का समय दो घंटे का होगा। पहले दिन करीब 900 छात्र परीक्षा देंगे। हाल ही में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने कोरोना के चलते स्नातकोत्तर और पीएचडी प्रोग्रामों में एडमिशन के लिए परीक्षा की तिथियां चार दिन में विभाजित कर तय कर दी थी। 6 सितंबर से परीक्षाएं होंगी। एजाम में करीब 3500 छात्र एवं छात्राएं शामिल होंगी। डीन प्रोफेसर आशा बवात्रा ने बताया कि परीक्षा की सभी तैयारी पूरी कर ली गई हैं। पानी की बोतल का भी इंतजाम किया गया है। प्रयास रहेगा कि परीक्षार्थियों को किसी भी तरह की परेशानी न होने दी जाए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

नि०प०२०१५।२०२३।

दिनांक ५....९....२०२३ पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

कपास की फसल में कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : वीसी

हक्किवि में अँनलाइन वेबिनार आयोजित, कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के मुख्य रोगों के लक्षण व समाधान बताए

नियशक्ति टाइम्स न्यूज हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौष्टि प्रजनन एवं आनुवाशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक अँनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर अँनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने



के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दबावियों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिड़ नहीं हो सकता है।

हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के पिशार्णों का प्रयोग करना एक कारण समझे आया है, जिससे कपास की फसल में नमों एवं पौष्टि के चलते समस्या बढ़ी है। वेबिनार के संयोजक व आनुवाशिकी एवं पौष्टि प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छावड़ा ने सभी प्रतिभागियों

का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन कपास की फसल में आने वाले कीटों व विभासियों के द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कीट वैज्ञानिक डॉ. अँनल जालड़ ने कपास में आने वाले कीटों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि कपास की फसल में रस चूसने वाले कीटों में सफेद मक्खी, धिप्स व हरा तेला मुख्य हैं जो फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। उन्होंने बताया कि इनमें सफेद मक्खी मवसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। वीज्ञा रोग विशेषज्ञ डॉ. मनमोहन ने कपास फसल की बीमारियों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि कपास में मूल्य रोग जड़ गलन, पैराविल्ट, पत्ता मरोड़ रोग एवं टिंडा गलन योग हैं। सभ्य वैज्ञानिक डॉ. करमल मलिक ने एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर अपना व्याख्यान तथा विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई खाद्य एवं उत्पादकों की मात्रा के अनुसार फसल में डालने के बारे में चर्चा की।

कृषि वैज्ञानिकों की सलाह का रखें विशेष ध्यान
अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि कपास हरियाणा प्रदेश की एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। इसलिए किसानों को इस फसल में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कीट वैज्ञानिक डॉ. अँनल जालड़ ने कपास में आने वाले कीटों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि कपास की फसल में रस चूसने वाले कीटों में सफेद मक्खी, धिप्स व हरा तेला मुख्य हैं जो फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। उन्होंने बताया कि इनमें सफेद मक्खी मवसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। वीज्ञा रोग विशेषज्ञ डॉ. मनमोहन ने कपास फसल की बीमारियों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि कपास में मूल्य रोग जड़ गलन, पैराविल्ट, पत्ता मरोड़ रोग एवं टिंडा गलन योग हैं। सभ्य वैज्ञानिक डॉ. करमल मलिक ने एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर अपना व्याख्यान तथा विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई खाद्य एवं उत्पादकों की मात्रा के अनुसार फसल में डालने के बारे में चर्चा की।

सफेद मक्खी के अनुकूल है मौसम

कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि इस साल मौसम सफेद मक्खी के अनुकूल है, अगर समय पर अवश्यकतानुसार चारिश नहीं होगी तो इसका प्रोतीप और भी बढ़ सकता है। इसलिए किसान अपनी फसलों का विशेष ध्यान रखें और समय-समय पर लक्षण दिखाई देते ही कृषि वैज्ञानिकों से परामर्श करते रहें। जहां सिंचाई या चारिश के बाद ज्यादातर पौधे मुरड़ा जाते हैं तो उन क्षेत्रों में इस बीमारी की संभावना होती है।

से कपास की फसल में गौजूदा समय में किए, जिनका कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बेहतर तरीके से जबाब दिया गया। आई समस्याओं को लेकर सवाल भी



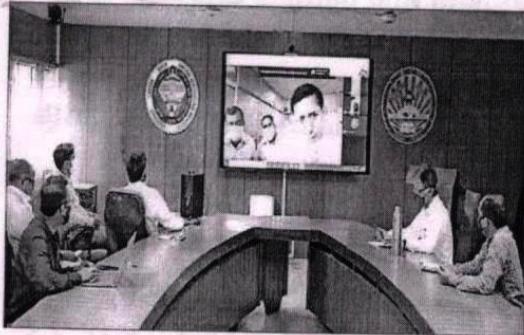
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाँच बजे

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

हक्कि में ऑनलाइन वेबिनार आयोजित, कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के मुख्य रोगों के लक्षण व समाधान बताए कपास की फसल में कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : प्रो. समर सिंह

पांच बजे



हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौर्ण प्रज्ञनात्मक विभाग के कपास अनुसंधान द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संक्षेप संकारण करते हुए विश्वविद्यालय के कृषि एकायन समर मिशन ने कहा कि कपास की फसल में बहुत उत्पादन के लिए कीटों व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य रोगों के प्रबंधन करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई ट्रॉफियों का ही प्रदान करें। इसके अन्तर्वाला फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के विना कौटनाशकों का छिड़काव नुकसानदारकर तो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का बहुत होने में किसानों द्वारा किया कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कौटनाशकों के स्थिरणों का प्रयोग करना एक कारण समझे आया है, जिससे कपास तो फसल में नहीं एवं पोषण के बहुत समस्या बढ़ी है। वेबिनार के संचालक व अनुशासित एवं पौर्ण प्रबंधन विभाग के

अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छावड़ा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन कपास की फसल में अनेकों कीटों व विभिन्न रोगों को ज्ञान में रखते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के. महराजन की देखरेख में आयोजित किया गया। कपास वैज्ञानिक डॉ. ओमेन्द्र साहारान ने भूमि का अनुसान संचालन किया एवं धन्यवाद प्रस्तुत करित किया। वेबिनार के दौरान संदीप, अख्य कुमार, तेजराम वर्षेल, अनिल, योगक आदि किसान व कृषि अधिकारियों

डॉ. अरुण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कृत्तम चौधरी, डॉ. मंदीप गढ़ी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मोत्रित समय में आई समस्याओं को लेकर सवाल भी किए, जिनके कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बेहतर तरीके से जवाब दिया गया।

कृषि वैज्ञानिकों की सलाह व सिफारिशों का रहे विस्तृप्त ध्यान

अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि कपास हरियाणा प्रदेश की एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। इसलिए

किसानों को इस फसल में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कौटनाशकों को लेकर की गई विभिन्न रोगों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जावड़ ने कपास में अनेकों कीटों के बारे में विवरण दिया हुए कहा कि फसल में रस चूसने वाले कोई भी मृदंग मक्की, शिरप व हरा तेल मुख्य है जो फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। उन्होंने बताया कि इस फसल मक्की सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। पीछा रोग विशेषज्ञ डॉ. मनमहेन ने कपास फसल को बोधार्याली के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि कपास द्वारा गत्तन, सैक्षिक, पत्त और गोल रोग एवं टिड़ा गत्तन रोग हैं। तीसीनी भूमि में ऐक्सिलिट का प्रक्रीय ज्यादा होता है। समय वैज्ञानिक डॉ. करमस भरिक के एकीकृत पोषण तत्व प्रबंधन पर अपने व्याख्यान दिया तथा विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई खाद्य एवं उत्पादों की मात्रा के अनुसार फसल में डालने के बारे में चर्चा की।

संप्रद भूमि के अनुसार है मौसम, किसान फसल की कीरणगारी

कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि इस साल मौसम संकेद वर्षीय के अनुकूल है, अगर

इसलिए किसान अपनी फसलों का विशेष ध्यान रखें और समय-समय पर लक्षण दिखाई देते ही कृषि वैज्ञानिकों से परामर्श करते रहें। कृषि वैज्ञानिकों से परामर्श पर्याप्त छिक्काव के स्पष्ट में 2.5 किलोग्राम वृद्धि प्रति 100 लीटर जली की पांचलिंगम नाइट्रोजन 13-0-45 की 2.0 किलोग्राम जला को 200 लीटर जली की दर से प्रति एकड़ में आवश्यकतानुसार बासी-बासी से प्रयोग करें। इनके अलावा संफेद मक्की के लिए स्प्राइटेंसिलिन्डर (अच्युतेन) 22.9 एस.सी. की 240 लीटरीनेट मज़ब या नीप आधारित कौटनाशक (नियोजीडेन/ अच्युत) की 1.0 लीटर मज़ब या पॉलीसीलीन (डिपटा) 10 ई.सी. की 400 ग्राम मात्रा को 200-250 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में आवश्यकतानुसार बासी-बासी से पीछे पर नियन्त्री वितर तक छिक्काव करों यदि कपास के पाते ज्यादा काटे दिखाई दें तो कोपर अक्सिलिटराइड की 600 ग्राम मात्रा की 200 लीटर जली की दर से छिक्काव करें। पैराकिल बोमारी के संरक्षित इलाकों में कैलेक्ट बल्टरॉड की 2.0 ग्राम मात्रा की 200 लीटर पानी की दर से एक एकड़ में लक्षण दिखाई देने के 24 से 48 घंटी के अंदर छिक्काव करें। जहाँ सिंगारै या खारिश के बाद ज्यादातर पौधे मृदां जाते हैं तो उन खेतों में इस बोमारी की संरक्षण जली होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

पल पल

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या । कॉलम ।

कपास की फसल में कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी: प्रोफेसर समर सिंह

पल पल न्यूज़: हिसार, 4 सितंबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवाशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिड़काव नुकसानदायक हो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर

कीटनाशकों का मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पौष्ण के चलते समस्या बढ़ी है। वेबिनार के संयोजक व आनुवाशिकी एवं पौद्य प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छबड़ा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन कपास की फसल में आने वाले कीटों व बिमारियों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत की देखरेख में आयोजित किया गया। कपास वैज्ञानिक डॉ. ओमेन्द्र सांगवान ने मंच का ऑनलाइन संचालन किया एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। वेबिनार के दौरान संदीप, अक्षय कुमार, तेजराम बघेल, अनिल, दीपक आदि किसान व कृषि अधिकारियों डॉ. अरूण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कुसुम चौधरी, डॉ. मंदीप राठी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मौजूदा समय में आई समस्याओं को लेकर सवाल भी किए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सन्देश.....

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या.....— कॉलम.....।

कपास की फसल में कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : समर सिंह

हिसार (सच कहूँ-न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवाशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते

हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कोटनाशकों का

छिड़काव नुकसानदावक हो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नभी एवं पौष्ण के चलते समस्या बढ़ी है। कपास वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मौजूदा समय में आई समस्याओं को लेकर डॉ. ओमेन्द्र सांगवान ने मंच का

प्रस्ताव पारित किया। वेबिनार के दौरान संदीप, अक्षय कुमार, तेजराम बघेल, अनिल, दीपक आदि किसान व कृषि अधिकारियों डॉ. अरूण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कुमुम चौधरी, डॉ. मंदीप राठी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में मौजूदा समय में आई समस्याओं को लेकर सवाल पूछ किए, जिनका कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बेहतर तरीके से जवाब दिया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

नम्रता

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

कपास फसल पर बारे वैबिनार का आयोजन

हिसार/04 सितंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा वर्तमान में कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन पर आयोजित वैबिनार में कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दवाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के बिना कीटनाशकों का छिड़काव

नुकसानदायक हो सकता है। हाल ही में कपास की फसल का नष्ट होने में किसानों द्वारा बिना कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिश के फसल पर कीटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग करना एक कारण सामने आया है, जिससे कपास की फसल में नमी एवं पौष्ण के चलते समस्या बढ़ी है। वैबिनार के संयोजक व अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छाबड़ा ने बताया कि इस वैबिनार का आयोजन कपास की फसल में आने वाले कीटों व बिमारियों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत की देखरेख में आयोजित किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
(Signature)

दिनांक ५-९-२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

कपास की फसल में कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी : प्रोफेसर समर सिंह

September 4, 2020 • Rakesh • Hisar Local News

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में ऑनलाइन वेबिनार आयोजित, कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के मुख्य रोगों के लक्षण व समाधान बताए।

हिसार : 4 सितम्बर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय वर्तमान में 'कपास फसल में कीट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के शुभारंभ अवसर पर ऑनलाइन किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कीट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कीट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई दबाइयों का ही प्रयोग करें। इसके अलावा फसल में कृषि



कृषि वैज्ञानिकों की सलाह व सिफारिशों का रखें विशेष ध्यान अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि कपास हरियाणा प्रदेश की एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। इसलिए किसानों को इस फसल में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़ ने कपास में आने वाले कीटों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि कपास कि फसल में रस चूसने वाले कीड़ों में सफेद मक्खी, श्रीपथ व हरा तेला मुख्य हैं जो फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। उन्होंने बताया कि इनमें सफेद मक्खी सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। पौष्टि रोग विशेषज्ञ डॉ. मनमीहन ने कपास फसल की बीमारियों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि कपास में मुख्य रोग जड़ गलन, पैराविल्ट, पत्ता मरोड़ रोग एवं टिंडा गलन रोग हैं। रेतीली भूमि में पैराविल्ट का प्रकोप ज्यादा होता है। सस्य वैज्ञानिक डॉ. करमल मलिक ने एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर अपना व्याख्यान दिया तथा



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

निपटी २०२०

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या.....

कॉलम.....

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्प

चौधरी चरण सिंह
हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय में
ऑनलाइन वेबिनार संपन्न



नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का सम्पन्न हो गया है। वेबिनार के द्वारा प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड पीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिली स्थित

वक्ता लाल लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दृष्टि और मीट से यन्मे उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो भी प्रोडक्ट दृष्टि या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी को मात्रा भी बहुत कम होती है। यहाँ दृष्टि से कई तरह का पनीर व मिलाइयां तैयार की जाती है जो कि खाने में पौष्टिक होती है जिनमें कोई भी मिलावट नहीं की जाती। ऐसे ही मीट से भी अलग-अलग तरह के पकवान तैयार किए जाते हैं जैसे मीट टिकी, बर्गर, टिकी, अचार आदि तैयार किया जाता है। इसके अलावा डॉ. अहलावत ने प्रतिभागियों को अलग-

स्टार्टअप्स को आगे बढ़ने का मौका देता है एबिक एबिक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एबिक के द्वारा युवाओं व उद्यमियों के लिए समय-समय पर इस प्रकार के वेबिनार व प्रशिक्षण आयोजित कर रहे हैं आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि व्यवसाय में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि इस इस ऑनलाइन वेबिनार में देशभाक्ति के अलावा विदेशों से भी प्रतिभागी शामिल हुए। उन्होंने बताया कि वह केंद्र उत्तर भारत का एकमात्र व देश का दूसरा केंद्र है जहाँ नए स्टार्टअप को आगे बढ़ने का मौका देता है और फाइनेंस, टेक्निकल, ईफास्ट्रक्चर, प्रारंभिक इयादि सुविधाएं भी एक जल के नीचे उपलब्ध करताता है। समय-समय पर कृषि को बढ़ावा देने के लिए कृषि मेला, यूट कैंप, कृषि संवैधान प्रशिक्षण आदि कार्बोक्रम पंजीकृत इनकार्यालयों के लिए कारबाएं आते हैं। वेबिनार का सचालन एबिक के प्रशासनिक अधिकारी निजा मरिक फोगाट व तकनीकी प्रबंधक मैनेजर अधित तत्वज्ञ ने किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों व वक्ताओं का धन्यवाद किया। सभी प्रतिभागियों को ई-प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे।

अलग पकवानों को तैयार करने की सारे पकवानों को तैयार करने के बारे में प्रोसेसिंग बताते हुए हाइजीनिक तरीके से भी जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... नम्बर चौरा

दिनांक ५-१-२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स पर वैबिनार

हिसार/04 सितंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एविक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वैबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वैबिनार में प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में जानकारी दी गई। वैबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. वीके अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के अहम पहलुओं के बारे में बताते हुए कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू हैं। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के

सभी क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी। वैबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। यहां दूध से कई तरह का पनीर व मिट्टाइयां तैयार की जाती हैं जो कि खाने में पौष्टिक होती हैं जिनमें कोई भी मिलावट नहीं की जाती। ऐसे ही मीट से भी अलग अलग तरह के पकवान तैयार किए जाते हैं जैसे मीट टिक्की, बर्गर टिक्की, अचार आदि तैयार किया जाता है। इसके अलावा डॉ. अहलावत ने प्रतिभागियों को

अलग अलग पकवानों को तैयार करने की प्रोसेसिंग बताते हुए हाइजीनिक तरीके से सारे पकवानों को तैयार करने के बारे में भी जानकारी दी। एविक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एविक के द्वारा युवाओं व उद्यमियों के लिए समय समय पर इस प्रकार के वैबिनार व प्रशिक्षण आयोजित कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि व्यवसाय में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। वैबिनार का संचालन एविक के प्रशासनिक अधिकारी निशा मलिक फेगाट व तकनीकी प्रबंधक मैनेजर अर्पित तनेजा ने किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों व वक्ताओं का धन्यवाद किया। सभी प्रतियोगियों को ई.प्रमाण.पत्र दिए जाएंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

सिटी प्लस

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या..... — कॉलम.....

एचएयू में ऑनलाइन वेबिनार आयोजित

कृषि वैज्ञानिकों ने कपास के मुख्य रोगों के लक्षण व समाधान बताए



हिसार। हरियाणा वेबिनार के दीर्घन प्रतिभागियों को संबोधित करते कृषि वैज्ञानिक व शास्त्रीय।

सिटी प्लस न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पौध प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग के कपास अनुभाग द्वारा एक ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय बत्तमान में 'कपास फसल में कोट और रोगों का एकीकृत प्रबंधन' था। वेबिनार के सुधार अवसर पर कुलपति प्रोफेसर मस्रूर रिसे ने कहा कि कपास की फसल में बेहतर उत्पादन के लिए कोट व रोगों का एकीकृत प्रबंधन जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान फसल के मुख्य कोट व रोगों की पहचान करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई टक्कड़ीयों का ही प्रयोग करें। इसके अलंकार फसल में कृषि वैज्ञानिकों की महत्व के बिना

कोटनाशकों का छिड़काव की फिफरिश के फसल पर पौधण के बहतरे समझ्या जही है। माल तीनों कोटनाशकों के मिश्रणों का प्रयोग वेबिनार के संचाजक व आनुवांशिकों करना एक कारण सामने आया है, एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार छबड़ा ने सभी जिसमें कपास की फसल में नमी एवं

प्रतिभागियों का स्वामत किया। उन्होंने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन कपास की फसल में आने वाले कीटों व बीमारियों के व्याप में रखते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान विभाग डॉ. एस.के. महरावत की देखभाल में आयोजित किया गया। वेबिनार के दीर्घन संदीप, अक्षय कुमार, तेजस्वी चंद्रेल, अनिल, दीपक, आदि किसान व कृषि अधिकारियों डॉ. अरुण यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. कुमार चौधरी, डॉ. मंदीप गढ़ी आदि ने विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों से कपास की फसल में गौचूदा समय में आई समस्याओं को सेकर सकाल भी किए, जिनका कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बेहतर तरीके में जवाब दिया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

पांच बजे

दिनांक ५.९.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्प

हक्कि में ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एविक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का समापन हो गया है। वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम पहलुओं के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पश्चिमित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइब स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ.

सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। यहां दूध से कई तरह का पनीर व मिठाइयां तैयार की जाती हैं जो कि खाने में पौष्टिक होती हैं जिनमें कोई भी मिलावट नहीं की जाती। ऐसे ही मीट से भी अलग-अलग तरह के पकवान तैयार किए जाते हैं जैसे मीट टिक्की, बर्गर टिक्की, अचार आदि तैयार किया जाता है। इसके अलावा डॉ. अहलावत ने प्रतिभागियों को अलग-अलग पकवानों को तैयार करने की प्रोसेसिंग बताते हुए हाइजीनिक तरीके से सारे पकवानों को तैयार करने के बारे में भी जानकारी दी।

स्टार्टअप्स को आगे बढ़ने का मौका देता है एविक

एविक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एविक के द्वारा युवाओं व उद्यमियों के लिए समय-समय

पर इस प्रकार के वेबिनार व प्रशिक्षण आयोजित कर उहें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि व्यवसाय में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि इस इस ऑनलाइन वेबिनार में देशभर के अलावा विदेशों से भी प्रतिभागी शामिल हुए। उन्होंने बताया कि यह केंद्र उत्तर भारत का एकमात्र व देश का दूसरा केंद्र है जहां नए स्टार्टअप को आगे बढ़ने का मौका देता है और फाइनेंस, टेक्निकल, इंफ्रास्ट्रक्चर, मार्केटिंग इत्यादि सुविधाएं भी एक छत के नीचे उपलब्ध करवाता है। समय-समय पर कृषि को बढ़ावा देने के लिए कृषि मेला, बूट कैंप, कृषि संबंधित प्रशिक्षण आदि कार्यक्रम पंजीकृत इनक्यूबेटी के लिए करवाए जाते हैं। वेबिनार का संचालन एविक के प्रशासनिक अधिकारी निशा मलिक फोगट व तकनीकी प्रबंधक मैनेजर अपिंत तनेजा ने किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों व वक्ताओं का धन्यवाद किया। सभी प्रतियोगियों को ई-प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... पल्लि पल्लि

दिनांक ५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या..... — कॉलम.....

सार समाचार

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्प

पल पल न्यूज़: हिसार, 4 सितंबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एबिक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन बेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे बेबिनार का समापन हो गया है। बेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। बेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के के सीईओ डॉ. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम् पहलुओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू हैं। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। बेबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइब स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों की प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। यहां दूध से कई तरह का पनीर व मिठाइयां तैयार की जाती हैं जो कि खाने में पौष्टिक होती हैं जिनमें कोई भी मिलावट नहीं की जाती। ऐसे ही मीट से भी अलग-अलग तरह के पकवान तैयार किए जाते हैं जैसे मीट टिक्की, बर्गर टिक्की, अचार आदि तैयार किया जाता है। इसके अलावा डॉ. अहलावत ने प्रतिभागियों को अलग-अलग पकवानों को तैयार करने की प्रोसेसिंग बताते हुए हाइजीनिक तरीके से सारे पकवानों को तैयार करने के बारे में भी जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

फैसले २३

दिनांक ५. ९. २०२२ पृष्ठ संख्या कॉलम

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्स



वेबिनार में प्रतिभागियों को जानकारी देते वक्ता व शामिल प्रतिभागी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा
कृषि विश्वविद्यालय में
ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

टुडे न्यूज़ | हिसार

स्टार्टअप्स को आगे बढ़ने का
मौका देता है एविक

एविक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एविक के द्वारा युवाओं व उद्यमियों के लिए समर्थन-समर्पण पर इस प्रकार के वेबिनार व प्रशिक्षण आयोजित कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि व्यवसाय में अपना भवित्व बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि इस इस ऑनलाइन वेबिनार में देशभर के अलावा विदेशी से भी प्रतिभागी शामिल हुए। उन्होंने बताया कि यह केंद्र उत्तर भारत का एकमात्र व देश का दूसरा केंद्र है जहाँ नए स्टार्टअप को आगे बढ़ने का मौका देता है और फाइनेंस, टेक्निकल, इंफ्रास्ट्रक्चर, मार्केटिंग इत्यादि सुविधाएं भी एक छत के नीचे उपलब्ध करवाते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एविक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का समापन हो गया है। वेबिनार के दैरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन पैनर के के सीईओ डॉ. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम पहलुओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रैथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के दूसरे सत्र में वक्ता लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी स्टॉक विभाग के अध्यक्ष डॉ. सत्यवीर अहलावत ने दूध और मीट से बने उत्पादों

की प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो भी प्रोडक्ट दूध या मीट से तैयार होते हैं वे न्यूट्रिशन और विटामिन से भरपूर होते हैं। उसमें कैलोरी की मात्रा भी बहुत कम होती है। यहाँ दूध से कई तरह का पनीर व मिठाइयां तैयार की जाती हैं जो कि खाने में पौष्टिक होती हैं जिनमें कई भी मिलावट नहीं की जाती। ऐसे ही मीट से भी अलग-अलग तरह के पकवान तैयार किए जाते हैं जैसे मीट टिक्की, बर्गर टिक्की, अचार आदि तैयार किया जाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

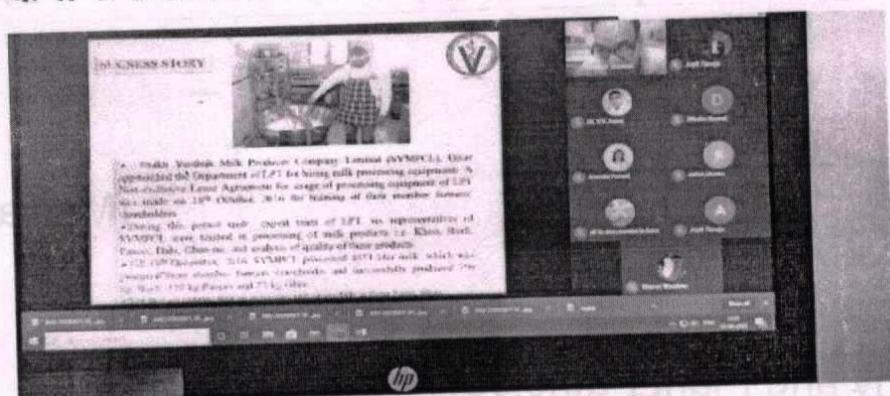
समाचार पत्र का नाम..... प्रीनिक दीरेपण

दिनांक ५ : ९ : २०२० पृष्ठ संख्या कॉलम

स्टार्टअप्स के लिए ऑनलाइन बताए स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के टिप्स¹ , H.A.U में ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

September 4, 2020 • Rakesh • Haryana News

हिसार: 4 सितम्बर
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित एविक सेंटर में स्टार्टअप्स के लिए जारी ऑनलाइन वेबिनार की सीरीज में आयोजित दूसरे वेबिनार का समापन हो गया है। वेबिनार के दौरान प्रतिभागियों को स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग फॉर्म स्टार्टअप्स व प्रोसेसिंग ऑफ मिल्क एंड मीट प्रोडक्ट्स के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। वेबिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली स्थित इंक्युबेशन सेंटर के सीईओ डॉ. वी.के. अरोड़ा ने स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के बारे में जानकारी देते हुए इसके अहम पहलुओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग स्ट्रेंथ और निवेश की व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू हैं। विपणन वैकल्पिक निवेश निधि प्राप्त करने और निवेश को प्रेरित करने में भी सहायता करता है। उन्होंने विपणन के सभी क्षेत्रों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वेबिनार के



स्टार्टअप्स को आगे बढ़ने का मौका देता है एविक एविक सेंटर की नोडल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि एविक के द्वारा युवाओं व उद्यमियों के लिए समय-समय पर इस प्रकार के वेबिनार व प्रशिक्षण आयोजित कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि व्यवसाय में अपना भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि इस इस ऑनलाइन वेबिनार में देशभर के अलावा विदेशों से भी प्रतिभागी शामिल हुए। उन्होंने बताया कि यह केंद्र उत्तर भारत का एकमात्र व देश का दूसरा केंद्र है जहां नए स्टार्टअप को आगे बढ़ने का मौका देता है और फाइनेंस, टेक्निकल, इंफ्रास्ट्रक्चर, मार्केटिंग इत्यादि सुविधाएं भी एक छत के नीचे उपलब्ध करवाता है। समय-समय पर कृषि को बढ़ावा